ताना-बाना

✨ जिंदगी का ताना-बाना
सांसों का आना-जाना
लम्हों का छूट जाना
यादों का चले आना

✨ मुसाफिरों का मिलना-जुलना
कुछ समझना कुछ समझाना
यहाँ-वहां संग चलना-फिरना
क्या लेना और क्या देना?

✨ यारों का उठना-बैठना
कुछ लड़ाई कुछ झगड़ा करना
जबरन के पंगे लेना
क्या खोना और क्या पाना?

✨ कहीं प्रेम तो कहीं द्वेष करना
जंतर-मंतर का खेल रचाना
समझ-बूझ ये रेला-पेला
कहां से आना किधर को जाना?

✨ यहीं पे सुख है यहीं पे दुखडा
क्यों फिर लटका तेरा मुखड़ा
तमाशा सारा समझ समीरा
न कोई गुरु नहीं कोई चेला!

✨ जिंदगी का ताना-बाना
कभी है चलना कभी सुस्ताना
खाली-पीली टेंशन क्यों लेना?
खाना-पीना और सो जाना!

समीर खांडेकर
कानपुर
अप्रैल २५, २०२२